बुद्धि निधान अभय कुमार

राजा श्रेणिक और नन्दा का पुत्र अभयकुमार पाठशाला में आचार्यों की प्रशंसा का पात्र होने के कारण सहपाठी उससे ईर्ष्या करने लगे थे। उसे नीचा दिखाने के लिए "बिना बाप का बेटा" कहकर चिड़ाना प्रारम्भ कर दिया। इस अपमान से तिलमिलाया हुआ अभय उदास होकर घर में बैठा था तभी उसकी माता नन्दा ने पूछा–

यह सुनकर नन्दा एकदम तड़फ उठी।

बेटा! उनका नाम, पता तो मुझे भी नहीं मालूम। किंतु उन्होंने यहाँ से जाते समय कहा था कि मैं राजगृह का गोपाल हूँ। नगर में सबसे विशाल श्वेत भवन मेरा घर है, जिसके सोने के कंगूरे आसमान से बातें करते हैं।
यह सुनकर विलक्षण बुद्धि का धनी अभय एकदम उछल पड़ा।
माँ! क्या तू नहीं समझी, पिताजी ने संकेतों में सब कुछ तो बता दिया।
वह कैसे?
माँ! 'गो' कहते हैं पृथ्वी को, उसका पालन करने वाला गोपाल; अर्थात् नगर का राजा। विशाल श्वेत भवन आकाश से बातें करते कंगूरे यह सब राजमहल के चिन्ह हैं। अवश्य ही मेरे पिताजी राजगृह नगर के राजा होंगे।
नन्दा चुप होकर अभय के विश्लेषण पर विचार करने लगी।
माँ! क्या सोच रही हो? पिताजी का परिचय मिल गया। अब हम उनके पास चलेंगे।
बेटा! तेरे पिता यदि राजगृह के राजा हैं तो मैं उनकी रानी हूँ। उनका कर्त्तव्य है कि मुझे सम्मानपूर्वक ले जायें।

अभय ने अपनी माँ के विचारों का मतलब समझ लिया।

ठीक है माँ। हम सीधे राजगृह न जाकर वहीं पास के किसी ग्राम में रुकेंगे और वहाँ कुछ ऐसा काम करेंगे कि पिताजी स्वयं चलकर आयें और हम दोनों को ही सम्मानपूर्वक राजगृह ले जायें।

नन्दा को अपने पुत्र की विलक्षण बुद्धि पर विश्वास था। उसने अभय के साथ चलने की स्वीकृति दे दी।

अभय कुमार और नन्दा कई दिन की यात्रा के बाद राजगृह के समीप नन्दीग्राम में पहुँचे।

माँ, हम कुछ दिन यहीं रुकेंगे।

माता को साथ लेकर अभय एक अच्छी धर्मशाला में आकर ठहर गया। नहा-धोकर अच्छे कपड़े पहनकर वह गांव की तरफ निकला।

वहाँ भीड़ क्यों लगी है? चलकर देखना चाहिए।